REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

जैनेंद्र कुमार का साहित्य विविध आयाम

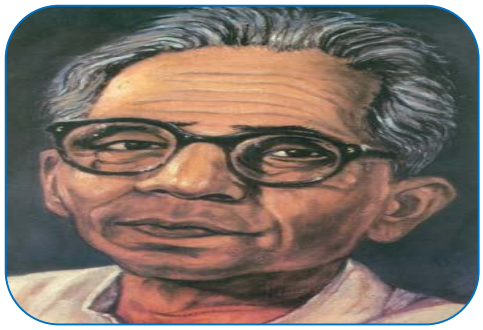

प्रा. डॉ. एम. ए. येल्लूरे
सहयोगी प्राध्यापक एवं शोध–निर्देशक, हिंदी विभाग प्रमुख,
बी.एस.एस. कला विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,माकणी,
तह. लोहारा जिला. उस्मानाबाद.

प्रस्तावना : –

हिंदी साहित्य के जाने–माने मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार जैनेंद्रकुमार है। जैनेंद्रकुमार व्यक्तीवादी मनोवैज्ञानिक कोटी के उपन्यास कार है। व्यक्तिके अंतरंगका विश्लेषण करना उनके उपन्यासों का लक्ष्य रहा है। उपन्यासके क्षेत्र में प्रेमचंद के पश्चात गोपी, तथा रविद्रं के धरातल पर लिखनेवाले उपन्यासकार जैनेंद्रकुमार है। उन्होंने उपान्यास शैलींको नया मोड दिया है। उन्होंने अपने उपन्यासो में समाज की अपेक्षा व्यक्ति को अधिक महत्व दिया है। उसके उपन्यासों में भरसक बौध्दिक ललकार और गमक है। जैनेंद्रकुमार हिदी साहित्य जगत् के पहले उपन्यासकार है, जिन्होने अपने उपन्यासों में बाहयजगत से हटकर मनुष्य कें अन्तर्गतत का सुक्ष्म रेखांकन किया हे। उनके उपन्यासों के मुख्य आयाम सेक्स, प्रेमविवाह, असफल प्रेम, पत्नीत्व और प्रेयसीत्व की उलझन विद्रोह के कारण मनकी गांठे और उनका उपचार है। गृहस्थी के अभावों में घर से निकलकर बाहर का आकर्षण तथा घरमें बाहर का प्रवेश है। इसके अतिरिक्त कतिथ सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं के अंतर्गत उन्होंनें विवाह, परिवार तथा जीवन असामंजस्य के प्रश्नों को उठाया है। इतना ही नहीं तो राजनीतिक समस्याओं का भी चित्रण उनके उपन्यासों में हुआ है।

1) मनोवैज्ञानिक साहित्य का प्रेरणास्त्रोत :–

हिंदी साहित्य में जैनेंद्रजी के प्रेरणासृजकी पृष्ठभूमि दो स्वतंत्र कालखंड की सीमाएँ है। इन भिन्न–भिन्न कालखंडो में भी समाज और नीति का क्षितिज पार करके धीरे परिवार और व्यक्ति रूपमें स्थिरता पाकर दिशा–ज्ञान भी कराती है। प्रेरणा सृजन और चिंतन की इस पार्श्वभूमि पर विचार करते हूए उनके उपन्यास साहित्य में इसकें प्राप्ति केवल अग्रह नहीं मिलता, तो रूढिगत, सामाजिक बंधनों के प्रति विद्रोह तथा केवल अग्रह नही मिलता तो रूढीगत सामाजिक बंधनोंके प्राति विद्रोह तथा उनको समूल नष्ट करने की आकांक्षा भी पाई जाती है। जेनैद्र की दृष्टि यदयपि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भावनाओंके चित्रण करने की और अत्यधिकार है फ़िर भी उन्होने सामाजिक सिंध्दांतो की चार दिवारे के बाहर भी झॉका है। यही आधुनिक दृष्टिकोण उनके उपन्यासों को साकार अभिव्यक्ति देता है।

2) जैनेंद्र के साहित्य राजनीतिक चेतनाकी अभिव्यक्ति :–

जैनेंद्र के साहित्यका परिवेश मुख्यतः शहरी जीवन से संबध रहा है। इस वर्ग के सांस्कृतिक संक्रमण की समस्याओंका विश्लेषण उनकी समस्त रचनाएँ करती है उनमें मूल्यों के श्रृखंला और सामाजिक विरासत की स्थितियों के सार्थक चित्रण के कारण उनको समाज विज्ञान के दस्तावेजों का स्थान प्राप्त हुआ है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में जैनेंद्र जैसे संवेदनशील रचनाकार रचनाओं मे व्यक्ति चेतना के विभिन्न रूप, सदर्भ, मोह, दिशा, आयाम इनमें आए परिर्वतन और उसीसे विमुख होती सामाजिकता, वैयक्तिकतता का दर्शन बिल्कुल स्वाभाविक रूप में आया है। आज विज्ञान और अर्थने नए मानव की सृष्ठि नहीं, अर्थ विज्ञान की सृष्टी

की है। जिससे मनुष्य को नया व्यक्तित्व, नई चेतना मिली। आज मानव कही इसी नयी चेतनाका मूलाधार है अर्थ–पैसा, संपत्ति, धन–धान्य सब कुछ अर्थ प्राप्त की संज्ञाएं है। व्यक्ति इसी से कंद्रीभूत है। उसकी चेतना भी व्यक्तिपरक और वृत्ति परक इन दो धृवों से चलती है। जैनेंद्र जी कें 'जयवर्धन' तथा 'मुक्तिबोध' इन कृतियों में इन चेतनाओ का व्यापकता पर प्रकाश डाला गया है। 'जयवर्धन' में राजनीतिक भविष्य को प्रतिष्ठित किया है । मानो इसमें एक रूप से राष्ट्रीय और आंतराष्ट्रीय राजनीति के संदर्भ में भारत का भविष्य पढने की कोशिश कि है।

3) जैनेंद्र के उपन्यास में नैतिकता के बदलते चित्र :–

जैनेंद्र के उपन्यास विभिन्न स्तरपर स्वातंत्र्यपूर्ण और स्वातंत्र्योंत्तर व्यक्ति और व्यक्ति चेतनाकी भूमिकाका उद्‌घाटन करते हैं। व्यक्तिवादी स्तरपर मानव–मानव के भीतर की व्यथा, उसकी विगलता और विगलनकारी करूणा को भी उभारते हैं।

स्वातत्र्योंत्तर कालखंड में व्यक्तिचेतना का एक स्त्रोंत व्यक्ति के अहं, असका उन्मीलन, आत्मपीडन और उसी के लिए किए गये विद्रोह में परिणत हुआ जिससे सामाजिक जीवन में नैतिकता की भी अवधारना बदलती गई। जिसमें व्यक्ति चेतना के साथ उसका क्रांतिकारी स्वर प्रधान बनता गया। जैनेंद्रजी के उपन्यासों में अभी इसकी स्पष्ठ झाकी मिलती है। मानव केवल एक शरीर ही नहीं है, बल्की वह शरिर से परे अपने आप में स्वतंत्र विभिन्न भावनाओं का एक संसार भी है। लेखक के ' मुक्तिबोध ' की नीलिमा सहाय के लिए पति कोई विशेष अर्थ नहीं रखता। वही कहतही है ''जिंदगी अपने तरीकों से चलती है, तुम्हारी जगह मि.सहाय कोई भी हो सकता है और हर सहाब की ओर मेरी जगह कोई और हो सकता है।'' ''विवर्त'' में चित्रित नायिका की भूमिका भी इसी प्रकार की है । नायक निर्धन है परंतू प्रेम मात्र धनी परिवार की लडकी भूवनमोहिनी से करता है । एक दूसरे से प्रेम करते हुए भी दोनों संशयग्रस्त है । कि धनी और निर्धन के प्रेम में सच्चाई और स्थिरता कैसे हो सकती है। प्रेमकी तिव्रता और उसके मध्य संशयग्रंथि विवाह में बाधक हो जाती है। 'सुखदा' की समस्या इस प्रकार बाहर और भीतर के सामजस्य की ही है, जो नारी के व्यक्तित्व की मुक्ति के संदर्भ में परिवार और बाहर के परिवेश की संबद्धता का अध्ययन करती है । तात्पर्य एकांत दांपत्य के क्षेत्र में तीसरे व्यक्ति की स्वीकृति को सहजता पूर्वक सीमित करना, इस कालकी महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक है। स्वाधीनताके पश्चात जिस तरह नैतिक–अनैतिकता प्रतिमान बदलते गए वैसे ही स्त्री एक नई शक्ति के रूप में सीमित हुई। उसमें एक नया विश्वास आया। उसकी विद्रोह वृत्ति जागृत हुई और जीवन के प्रति वह प्रयोगात्मक दृष्टिकोन से देखते हैं।

प्रयोगात्मक दृष्टिकोन के साथ और एक नया नैतिकता परिणाम जैनेंद्रजी के उपन्यासों में चित्रित होता है । सनातन भारतीय परंपारिक अनुसार जैनेंद्र प्रेम और विवाह की अधारशिला सच्ची प्रिति और परस्पर विश्वास ही मानते है । मन–वचन–कर्म–तीनों के समन्वय की प्रधानता सच्ची नैतिकता का आधार होता है ।

4) जैनेंद्र के साहित्य में बदलते प्रवाहमान दृष्टि :–

हॉ स्वातंत्र्योंत्तर काल के जिन स्वाभाविक परिवर्तनों को जैनेंद्रजीने अपने दृष्टिपथ से झॉका है, उन झॉकियो में पाए अशुभ के संकेतों को अपनी गहरी सद्‌वृति का साज भी वे चढाना चाहते हैं। **'अनामस्वामी'** उसी का द्योतक है। दो भिन्न व्यक्ति और भिन्न संस्कृति के टकराहट से उत्पन्न संधर्षपूर्ण संबंध स्थितियों के चित्रण के साथ व्यवस्था की बदलाव की दृष्टि का प्रवाह पी.दयाल के चरित्र से फुट पडता है। **अनामस्वामी** और उनके प्रतिरोधी श्री.शंकर उपाध्यायके व्यक्तित्व का अंकज पी.दयाल के चरित्र से फुट पडता है। मृणाल बुआ जिस हिंदू समाज के जड संस्कारों का शिकार बनी, धन के प्रति अतिरिक्त प्रतिष्ठा कही भावना जिस समाज व्यवस्था के मूल में निहित है इसके कारण पी.दयाल उचित अवसर पर मृणाल की सहायता नहीं कर सके। इस समाज की व्यवस्था को दृढ करने वाली रजा से त्यागपत्र ही एकमात्र साधन उनके पास था जिससे अपने मन की चोट को वे कुछ सांत्वना दे सकते थे। जीवन के श्रेय और प्रेम के बारे में अंतिम उद्‌देश्य और सार्थकता के संदर्भ में, जीवन के प्रचंड व्यापार और गति में अपने कर्तव्य को लेकर गहन आत्म मंथन की प्रकिया पी.दयाल के मन में चलती है। इस आत्म मंथन के मूल में उनका अपनी समर्थता का गहरा पीड–बोध भी है।

जैनेंद्र कुमार ने सामाजिक समस्याओं के अंर्तगत विधवा विवाह, अनमोल विवाह, जैसी समस्याओं को उछला है । **'परख'** का कटो बचपन में विधवा हो गई है । वह अपने पडोसी सत्यधन को चाहने लगती है। परंतू वह उसके साथ विवाह नहीं कर सकती क्यों कि वह विधवा और निम्नजाति की है । इसी तरह सुधारवादी बिहारी उसे अपनाना चाहता है। किंतू वह उसे अपने साथ नहीं रखने चाहता अलग–अलग गॉव में रहकर वे एक दूसरे साथी बन जाते है। इसलिए की समाज उनके संबंधोको खुलेआम स्वीकार नहीं करेगा । ''त्यागपत्र'' के मृणाल का अनमोल विवाह है।

वह समन्वय बनाने को तत्पर है, किन्तू पति की शंकाळू प्रकृति उसके लिए पारिवारिक समस्या बन जाती है। ''सुनीता'' उपन्यास की सुनीता का पति श्रीकांत नपुंसक है। इसलिए वह सुनिता को अपने मित्र हरिप्रसन्न में घुल–मिल जाने की प्रेरणा देता है। इसलिए की सुनिता घर में संतुलित रहें। ''सुखदा'' उपन्यास की सुखदा की स्थिति सुनीता से अलग है। उनसे अपने विवाह–पूर्ण के सुनहरे सपनों को साकार करने के लिए अपने पति कान्त तथा पुत्र की उपेक्षा कर दी है। परिणामतः घरमें बाहर का प्रवेश उसके लिए गृहभंजक सिध्द हुआ है। ''व्यतीत '' मे जयंत के मानसिक कुंठा का अंकन है। जयंत अपने दूर के रिश्ते की बहन अनिता को चाहता है परंतू नाते–रिश्तों के पारिवारिक तथा सामाजिक बंधन उन्हें एक नही होने देते है । वे एक–दुसरे अलग हो जाते है। जयन्त अनिता को खोकर मानसिक संन्तुलन खो बैठा। अतः वह अन्य नारी से सुखद गृहस्थ जीवन नहीं जी पाया।

जैनेंद्र ने ''मुक्तिबोध'', ''जयवर्धन'' उपन्यासों में राजनीतिक समस्याओं को उजागर किया है। व्यक्ति राजनीति में पडकर परिवार के लिए समस्या बनता है। ''मुक्तिबोध'' उपन्यास का सहाय भीतर से पदलोलूपता और बाहर से त्याग के आडम्बर से पिडित होनें के कारण परिवार के लिए समस्या बन जाता है। मानसिक अशांन्ति और उहापोह में वह जीता है। ''जयवर्धन'' उपन्यास में ''राज्य बनाम समाज'' राष्ट्रवाद बनाम मानवतावाद '' की समस्याका खुलकार अंकन हूआ है।

निष्कर्ष :–

संक्षेप में अध्ययन मनन और चितन के बाद हम यह कह सकते हैं कि, जैनेंद्र का उपन्यास साहित्य विविध आयामों से ओत–प्रोत तथा परिपूर्ण है। साथ ही उनके साहित्य में परंपरा और उससे राजनीतिक मुहावरों की टकराहट स्त्री की स्थिति और भुख, पीढियों की बीच बढती दूरी आदि बिंदूओं पर जैनेंद्र अत्यधिक गहराई में विचार करते हैं। इतनाही नहीं तो राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय समस्याओं के प्रति संवेदनशील तथा सामाजिक राजनीतिक समस्याओं को समन्वय की शैली से सुलझाने के पक्षघर है। जैनेंद्र का एक ही नायक जनमानस–वह त्याग पत्रका जज हो, जयवर्धन, अनामस्वामी, त्यागपत्र की बुआ या सुनिता या दर्शांक की रंजना हो सब विभिन्न पहलू जो हम सब में हैं । जिसे कई वर्षों से हमने पहचानने से इन्कार कर दिया है, जिससे इन्सायित की पराजय, कुंठा सत्यमेव जयते, भीषण नरसंहार, घुटन, मानसिक गुलामी का जहर उछालकर चेहरे पर आ गिरता है । इस प्रकार जैनेंद्रजीने यहॉ मानवमन की अनेक गतिविधीयों कों आत्मसात कर उनको समर्थ शब्दावली में उपस्थितकर उन्होंने मनोवैज्ञानिक उपन्यास का शिलान्यास किया है।

संदर्भ सूचि

1) डॉ.नीरजा राजकुमार–समाज–मनोविज्ञान के संदर्भ में जैनेंद्र का साहित्य।
2) डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर–उपन्यास स्थिति और गति, वाणी प्रकाशन दिल्ली।
3) डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर–जैनेंद्र के उपन्यास मर्म की तलाश।
4) जैनेंद्रकुमार–सुनीता।
5) डॉ.राजमल बोरा–हिंदी अन्यासः प्रयोग के चरण।
6) डॉ.देवराज उपाध्याय–जैनेंद्रके उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन।
7) श्यामनंदन प्रसाद सिंह–हिंदी साहित्य सर्वेक्षण और साहित्य।